## 1.4 प्रमुख महासागरीय मार्ग (Major Ocean Routes)

कुछ सीमाओं के बावजूद सामुद्रिक मार्ग की विशेपताएँ अधिक हैं । जिसमें न्यूनतम दूरी तथा न्यूनतम लागत परिवहन खर्च सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से महावृत्तीय मार्ग सदैव यात्री, माल, जलवायु या फिर कोयले की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए बदल दिए जाते हैं । मिस्र के महासागरीय जलमार्गों की प्रगति उन्हीं दो महादेशों के मध्य अधिक हुई है जो संपन्न राष्ट्र है, अथवा घनी जनसंख्या के क्षेत्र हैं । यही नहीं, समुद्री जलमार्गों की स्थिति विभिन्न परिस्थिति वाले देशों के मध्य पायी जाती है ।

विभिन्न आर्थिक स्तर पर विकसित राज्यों के मध्य महासागरीय मार्ग स्थित हैं । यूरोपीय देशों से निर्मित वस्तुएँ कनाडा एवं कनाडा खाद्य-पदार्थ यूरोपीय देशों को भेजा जाता है । जिसके लिए महासागरीय मार्ग की सहायता ली जाती है ।

दो भिन्न जलवायु प्रदेश के उत्पादन के आदान-प्रदान हेतु भी महासागरीय मार्ग का सहारा लिया जाता है । उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों से मसाला, चीनी, कहवा, रबड़, यूरोपीय देशों में तथा इन सामग्रियों के बदले यूरोप से मशीन एवं अन्य निर्मित सामाग्रियों इन देशों में मंगायी एवं भेजी जाती है ।

ऐसा कहा जाता है कि **"विश्व के सभी प्रमुख व्यापारिक मार्ग पश्चिमी यूरोप पर आकर समाप्त होते हैं"** । इसका मुख्य कारण यह है कि पश्चिमी यूरोप विश्व का सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक भाग है । विश्व में सबसे अधिक कच्चे माल का उपयोग यहाँ होता है और यहाँ से सबसे अधिक तैयार माल निर्यात किया जाता है । पश्चिमी

### 1.4.7 स्वेज नहर मार्ग (Suez Canal Route)

स्वेज नहर भूमध्यसागर एवं लाल सागर को जोड़ने वाली नहर है । जिसकी लंबाई 162 किलोमिटर, चौड़ाई 60 मीटर तथा गहराई 10 मीटर है । 1956 ई० में इस नहर का राष्ट्रीयकरण मिस्र सरकार ने किया, जबकि 1967 ई० में संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस राष्ट्रीयकरण को अपनी सहमती दी । इस नहर में लाल सागर के पास पोर्ट स्वेज तथा भूमध्यसागर तट पर पोर्ट सैद स्थित है । यह नहर विश्व की सबसे बड़ी जहाजी नहर है । यह नहर पूरी लंबाई तक समूह की सतह पर बनी है । इस मार्ग पर पश्चिमी यूरोपिय देशों में कोयला एवं पूर्वी द्वीप समूह में पेट्रोलियम ईंधन मिलता है । इस मार्ग पर जिब्राल्टर, माल्टा, स्वेज, अदन, मुंबई, कोलम्बों, कोलकाता एवं सिंगापुर प्रसिद्ध बंदरगाह हैं । चित्र सं० 1.8 में आगे इसका विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है । इस नहर द्वारा अंतराष्ट्रीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि आयी है ।

स्वेज नहर विश्व की सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण जहाजी नहर है । जो स्वेज के स्थल डमरुमध्य को काटकर बनाया गया है । यह नहर मार्ग भूमध्यसागर को लाल सागर से जोड़ती है । जिससे दक्षिण एवं पूर्वी एशिया से यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका का सामुद्रिक मार्ग कई हजार किलोमिटर कम हो गया है । यही नहीं सघन आबादी वाले क्षेत्रों से गुजरनें के कारण सुरक्षा भी अधिक है । साथ ही घिरें हुए समुद्र होने के कारण इसमें तूफान का भय भी अपेक्षाकृत कम है ।

यह स्वेज नहर फर्डीनेण्ड-डी-लैसेप्स के निर्देशन में सन् 1869 ई० में बनायी गयी । जिसके बनाने में लगभग 180 लाख पौण्ड खर्च किए गए । यह नहर 10 वर्षों में बनकर तैयार हुआ । 1956 ई० के बाद से इस नहर पर मिस्र देश का अधिकार है । स्वेज नहर से संबंधित कई अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ हैं–

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | निर्माण कार्य आरम्भ | = | 1859 ई० |
| 2. | निर्माण कार्य संपन्न | = | 1869 ई० |
| 3. | नहर मार्ग की कुल लंबाई | = | 162.5 किलोमीटर |
| 4. | नहर मार्ग की औसत गहराई | = | 10 मीटर |
| 5. | नहर मार्ग की औसत चौड़ाई | = | 60-65 मीटर |
| 6. | ढ़ोने योग्य भार सीमा | = | 20,000 टन |
| 7. | नहर को पार करने में जहाज को लगनेवाला औसत समय | = | 15 घंटा |
| 8. | अधिकतम गति सीमा निर्धारित | = | 10–14 कि०मी०/घंटा |
| 9. | एक दिन में पार करनेवाले अधिकतम जहाजों की संख्या | = | 24 |
| 10. | प्रति वर्ष नहर मार्ग से पार करनेवाले जहाजों की संख्या | = | लगभग 6000 |
| 11. | सामान से लदे हुए जहाज का भाड़ा | = | 6 गोल्ड फ्रेक प्रति टन |

स्वेज नहर मार्ग मुख्यत: लाल सागर स्थित पोर्ट स्वेज को भूमध्यसागर स्थित पोर्ट सैद से मिलाती है । नहर निर्माण के आरंभ में फ्रांसीसी एवं मिस्र के बादशाह का इसके आधा-आधा हिस्सा पर अधिकार था । बाद में 1875 ई० में मिस्र के बादशाह का हिस्सा अंग्रेज सरकार ने खरीद लिया । आरंभिक समझौते के अनुसार यह ठेका 100 वर्षों के लिए था, परन्तु 1956 ई० में मिस्र सरकार ने इस मार्ग पर अधिकार कर लिया ।

1967 ई० में अरब-इजारायल युद्ध के बाद यह नहर परिवहन के लिए पूर्णत: बंद कर दिया गया था, परन्तु 1974 ई० में इसके पुन: खुल जाने से अब परिस्थितियाँ आसान हो गयी है । यह नहर यूरोप के विकसित एवं एशिया के विकासशील देशों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करता है । इस नहर मार्ग में एक बार में एक ही जहाज पार कर सकता है । यानि इस नहर में एकदिशीय परिवहन प्रणाली कार्य करती है ।

स्वेज नहर पूरी लंबाई में समुद्र की सतह पर बनी हैं । इस मार्ग का महत्व इस बात को लेकर है कि इसमें दो स्थानों पर ईंधन मिलता है । पहला म्यंनमार एवं पूर्वी द्वीप-समूह में पेट्रोलियम तथा दूसरा पश्चिमी यूरोपीय देशों

में कोयला । इस मार्ग के अंतर्गत जिब्राल्टर, माल्टा, स्वेज, अदन, मुंबई, कोलम्बों, कोलकाता एवं सिंगापुर प्रसिद्ध बंदरगाह हैं, जिनमें सभी स्थानों पर जहाजों को कोयला लेने की सुविधाएँ हैं । इस नहर मार्ग के बन जाने के कारण विभिन्न स्थानों के बीच की दूरी में उल्लेखनीय कमी आयी है । जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में समय एवं दूरी कम लगने से खर्च भी कम हो गया है ।

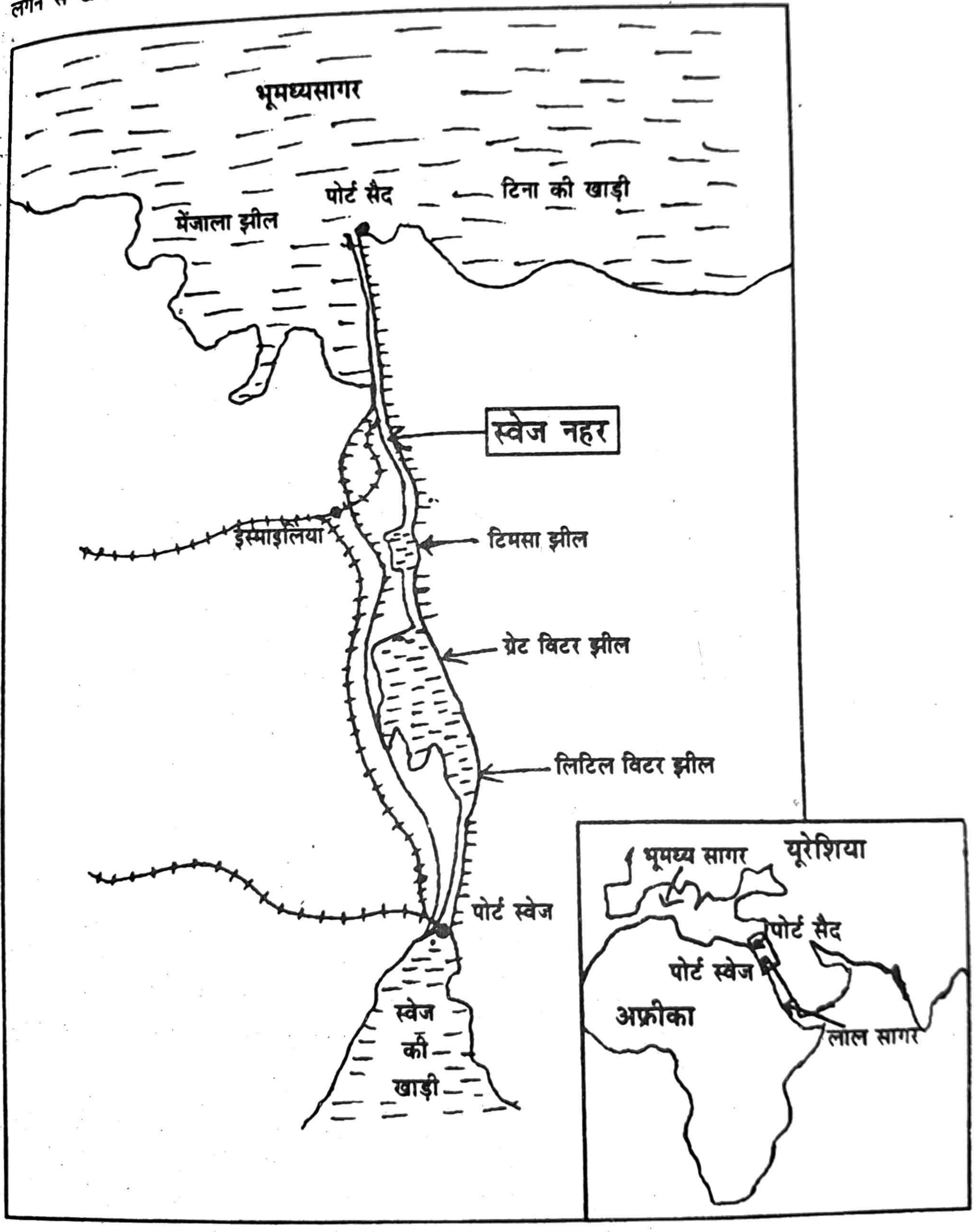


चित्र सं० 1.7 : स्वेज नहर

| स्थान | दूरी में कमी ( किलोमीटर में ) | स्थान | समय की बचत |
|---|---|---|---|
| लिवरपूल से मुंबई | 7250 | लंदन से मुंबई | 23 दिन |
| लिवरपूल से हांगकांग | 4500 | लंदन से कोलम्बो | 18 दिन |
| न्यूयार्क से मुंबई | 4500 | लंदन से कोलकाता | 17 दिन |
| लिवरपूल से जावा | 4200 | लंदन से हांगकांग | 17 दिन |
| न्यूयार्क से जावा | 2400 | लंदन से सिंगापुर | 17 दिन |
| | | लंदन से सिडनी | 4 दिन |

स्वेज नहर वास्तव में अटलांटिक महासागर एवं हिन्द महासागर को जोड़ती है । इस नहर द्वारा होने वाले व्यापार को भूमध्यसागरीय हिन्द महासागरीय मार्ग के अंतर्गत विस्तृत व्याख्या की गयी है ।

यह नहर मार्ग लाल सागर को पार करने के बाद दो दिशाओं में बँट जाता है । पहला अफ्रीका के पूर्वी किनारे होते हुए डरबन तक और दूसरा लंदन से अदन, मुंबई, सिंगापुर, हांगकांग होते हुए आस्ट्रेलिया के बंदरगाहों तक जाता है । इस जलमार्ग की 6 मुख्य शाखाएँ हैं

(i) भूमध्यसागर एवं काला सागर मार्ग

(ii) भूमध्यसागर एवं पश्चिमी यूरोपीय मार्ग

(iii) भूमध्यसागर एवं उत्तरी अमेरिका मार्ग

(iv) पश्चिमी यूरोप एवं पूर्वी एशियाई मार्ग

(v) पूर्वी उत्तरी अमेरिका एवं सुदूर पूर्व का मार्ग तथा

(vi) दक्षिण एशिया एवं पूर्वी एशिया का मार्ग ।

स्वेज नहर द्वारा होनेवाले व्यापार एवं उसकी दिशा को चित्र संख्या 1.4 द्वारा समझा जा सकता है । इस जलमार्ग पर यूरोप से पूर्व की ओर भेजे जानेवाले सामानों में सीमेंट, धातु का सामान, खाद, पेट्रोलियम, एवं पेट्रोलियम पदार्थ, मशीनें, चीनी, कागज लुग्दी, रासायनिक द्रव्य, नमक एवं अनाज प्रमुख है जबकि पूर्वी एवं दक्षिणी देशों द्वारा यूरोप की ओर भेजे जानेवाले सामानों में अनाज, पेट्रोलियम एवं पेट्रोलियम पदार्थ मुख्य है ।

स्वेज नहर जलमार्ग के अंतर्गत चीन एवं श्रीलंका से चाय, भारत से जूट, चीनी एवं चाय फिलिपींस से चीनी एवं तंबाकू, श्रीलंका एवं मलेशिया से रबड़, म्यनमार एवं फारस की खाड़ी से मिट्टी के तेल, प्रशांत तटीय द्वीपों से नारियल, पूर्वी अफ्रीका से रबड़, कच्चा चमड़ा एवं हाथी दाँत भेजे जाते हैं । ये सभी सामान पश्चिमी यूरोप एवं अमेरिका को भेजे जाते हैं ।

निर्यात योग्य वस्तुओं में आस्ट्रेलिया गेहूँ, डेयरी पदार्थ, ऊन, ताँबा, और सोने का निर्यात करता है जबकि न्यूजीलैंड डेयरी पदार्थ एवं ऊन का निर्यात करता है ।